'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2013-15
WPP Licence No.- U(C)-101/2013-15
R.N.I. No. 68180/98

Date of Publication : 15.03.2015
Date of Posting on concessional rate :
2-3 & 16-17 of each fortnight

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी-22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन : 23354841-42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 18 ● अंक 11 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 16 से 30 अप्रैल, 2015

जब संसद मार्ग बना परिसंघ नगर

नई दिल्ली, 14 अप्रैल, 2015। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिल्ली के संसद मार्ग पर बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की जयंती बड़े पैमाने पर मनायी गयी। अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद, डॉ0 उदित राज के नेतृत्व में सैकड़ों संगठनों ने अपने बैनर, पोस्टर के साथ स्टाल लगाए और समारोह में दस हजार से भी अधिक संख्या में शामिल हुए। परिसंघ के दिल्ली के साथियों ने संसद मार्ग को परिसंघ नगर में तब्दील कर दिया। पूरे पार्लियामेंट स्ट्रीट पर अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के ही बैनर व होर्डिंग दिखाई दे रहे थे।

पार्लियामेंट स्ट्रीट पर बनाए गए परिसंघ नगर का एक दृश्य

कार्यकर्ता में उपस्थित मीडिया से बात करते हुए माननीय डॉ. उदित राज

समारोह को डॉ0 उदित राज जी के अलावा भारत सरकार में गृह राज्य मंत्री, श्री किरन रिजीजू, सांसद, श्रीमती मीनाक्षी लेखी एवं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष, श्री सतीश उपाध्याय ने भी समारोह को सम्बोधित किया। श्री किरन रिजीजू ने कहा कि मोदी सरकार में वे अकेले बौद्ध मंत्री है और दलितों व गरीबों की पीड़ा को महसूस करते हैं और किसी भी दलित के साथ जातीय भेदभाव व उत्पीड़न कदापि बर्दाश्त नहीं करूंगें, यदि किसी प्रकार का ऐसा मामला मेरे संज्ञान में लाया जाता है तो तुरंत कार्यवाही होगी। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि यदि सरकार से अपने हितों को सुरक्षित कराने की अपेक्षा करते हैं तो दलितों की आवाज उठाने वाले एकमात्र सांसद, डॉ0 उदित राज को समर्थन देकर मजबूत बनाएं। सांसद एवं दिल्ली नगर पालिका परिषद की चेयरमैन, श्रीमती मीनाक्षी लेखी से आयोजकों ने एन.डी.एम.सी. में कार्यरत् दलित कर्मचारियों की हितों की रक्षा का आवाहन करते हुए जब संबोधन के लिए बुलाया तो श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी ने कहा कि जैसे ही वे एन.डी.एम.सी. की चेयरमैन बनीं तुरंत ही ठेके और दिहाड़ी पर कार्य कर रहे 8500 लोगों को स्थायी कर दिया लेकिन मीडिया ने इसे कोई तवज्जो नहीं दिया, जिससे आप लोगों तक यह संदेश नहीं पहुंच पाया। उन्होंने दलितों व गरीबों के हितों की रक्षा के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। श्री सतीश उपाध्याय ने उपस्थित लोगों को बाबा साहेब के जन्मदिवस की शुभकामनाएं दीं और कहा कि जरूरी नहीं है कि बाबा साहेब की जयंती सिर्फ अनुसूचित जाति/जन जाति के लोग ही मनाएं, हम सभी को मिलकर मनाना चाहिए, क्योंकि बाबा साहेब का योगदान पूरे देश के लिए है।

डॉ0 उदित राज जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि आज डॉ0 अम्बेडकर की 124वीं जयंती के उपलक्ष्य पर संसद मार्ग से घोषणा किया कि उनके विचारों और दर्शन को सही रूप में लागू करने के लिए एक नए आंदोलन की आवश्यकता है। इस अवसर पर परिसंघ की पूरे देश की सभी इकाइयों के द्वारा दस लाख सदस्यता के लक्ष्य की प्राप्ति की शुरुआत की गयी। आज इस समारोह में हजारों लोगों ने सदस्यता ली। दलित व आदिवासी नेताओं ने कहीं ज्यादा डॉ0 अम्बेडकर के सिद्धांतों को अपनी सुविधानुसार व्यक्तिगत् हित में इस्तेमाल किया है। उन्होंने पूरे जीवन जातिविहीन समाज की स्थापना की लड़ाई लड़ी, लेकिन आज हम देखते हैं कि जाति का सहारा लेकर नेता बनना, विधान सभाओं एवं संसद में पहुंचना, तक सीमित रह गया है। इससे न केवल दलित समाज का अहित हो रहा है, बल्कि राष्ट्र की भी क्षति है। हजारों वर्षों तक देश दूसरों के अधीन था, इसलिए कि यहां का समाज हजारों टुकड़ों में विभाजित था। जब दलित नेता जातिवाद करें तो ठीक है और सवर्ण करें तो बुरा, यह नहीं चलेगा।

डॉ0 उदित राज ने कहा कि समाज को बदलने का कार्य मूलरूप से कर्मचारी-अधिकारी ही कर सकते हैं, न कि सांसद और विधायक। सांसद और विधायकों की संख्या दस हजार पार नहीं कर सकेगी लेकिन कर्मचारियों व अधिकारियों की संख्या 20 लाख से भी अधिक होगी। चाहे दलित उत्थान हो या राष्ट्र निर्माण हो, अगर सबसे ज्यादा जरूरत है तो सामाजिक शिक्षा की। ये कर्मचारी-अधिकारी ही समाज को बदल सकेगें। ऐसा परिसंघ का मानना है। परिसंघ की देश की कोने-कोने में शाखाएं हैं, अब इसके कार्यकर्त्ताओं को नकली समतामूलक और मानवतावादी कार्यकर्त्ताओं और नेताओं की असलियत बताने का समय आ गया है। परिसंघ ने कभी सवर्णों की आलोचना करके दलितों को एकजुट करने का कार्य नहीं किया, बल्कि डॉ0 अम्बेडकर के सिद्धांतों पर चलकर संघर्ष किया। परिसंघ वर्तमान में भूमिअधिग्रहण अध्यादेश का समर्थन करता है, क्योंकि जब तक आद्यौगीकरण नहीं होगा तब तक रोजगार सृजित नहीं हो पाएंगें। दलितों के पास जमीन भी कम है और इसीलिए बड़े शहरों की ओर पलायन करते हैं। इंडस्ट्रियल कोरीडोर बन जाने से करोड़ों रोजगार पैदा होगें, बड़े शहरों पर आबादी का भार भी कम होगा, कृषि पर आधारित जनसंख्या भी कम होगी।

परिसंघ अपनी पूर्व मांगें, जैसे - पदोन्नति में आरक्षण, आरक्षण कानून बनाना, खाली पदों पर भर्ती, अनुसूचित जाति/जन जाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम को मजबूत करना, शिड्यूल्ड कास्ट सब प्लान एवं ट्राइबल सब प्लान को आबादी के अनुपात में योजनागत् बजट की राशि आबंटित कर दलितों-आदिवासियों के उत्थान, ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति, निजी क्षेत्र में भागीदारी, जाति प्रमाण-पत्रों की समस्या आदि के लिए और मजबूती से डॉ0 अम्बेडकर की 124वीं जन्मसदी पर संकल्प दोहराया।

+++

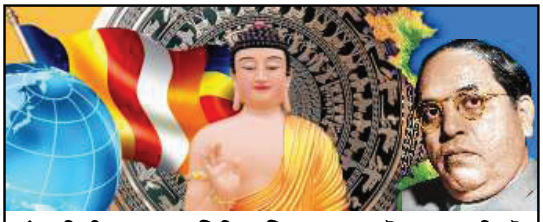

अंतर्राष्ट्रीय बुध्द पूर्णिमा दिवस समारोह 4 मई को

आपको जानकर हर्ष होगा कि प्रथम बार भारत सरकार के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय बुद्ध पूर्णिमा दिवस आगामी 4 मई को प्रातः 10 बजे से तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी होगें। भारत सरकार के द्वारा इस पवित्र कार्यक्रम का आयोजन होने का मतलब भगवान बुद्ध की पूर्णिमा के महत्त्व को आगे बढ़ाना। कार्यक्रम को मुख्यरूप से डॉ. उदित राज एवं किरन रिजीजू, गृह राज्यमंत्री, भारत सरकार संबोधित करेगें। आपसे अनुरोध हैं कि सभी साथियों के साथ उपस्थित हों।

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का
अखिल भारतीय परिसंघ

उपरोक्त कार्यक्रम के संबंध में अधिक जानकारी हेतु
श्री परमेन्द्र - 8826180767 एवं श्री संजय राज - 9654142705
से सम्पर्क किया जा सकता है।

बौद्ध धर्म से संम्पूर्ण विश्व का भला

बुद्ध जयंती अर्थात बुद्ध पूर्णिमा या वेसाक या हनमतसूरी बौद्ध धर्मावलम्बियों के साथ साथ सम्पूर्ण भारत वर्ष के लिए एक महत्वपूर्ण, आस्था जन्य और उल्लासपूर्वक मनाया जाने वाला पर्व है। भगवान् बुद्ध के अवतरण का यह पर्व वैशाख पूर्णिमा के दिन पड़ता है। विश्व के अनेक भागों में फैले हुए बौद्ध मतावलंबी इस पर्व को वेसाक के नाम से भी जानते हैं। वेसाक शब्द भारतीय माह के नाम वैशाख का ही अपभ्रंश है। भगवान् बुद्ध के संकिसा में 563 ईसा पूर्व में आज के दिन अवतरण होने के साथ-साथ इसी दिन को भगवान् बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति का दिन भी माना जाता है। आश्चर्य जनक संयोग है कि 483 ईसा पूर्व की वैशाख पूर्णिमा के दिन को भगवान् बुद्ध को देवरिया जिले के कुशीनगर में महा परिनिर्वाण प्राप्त हुआ था। बुद्ध पूर्णिमा का यह पावन पर्व भारत, चीन, तिब्बत, जापान, कोरिया, नेपाल, सिंगापुर, विएतनाम, थाईलैंड, लाओस, कम्बोडिया, मलेशिया, श्रीलंका, म्यांमार, ताइवान, हांगकांग, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, रूस, तुर्किस्तान, मंगोलिया बांग्लादेश आदि अनेकों देशों में मनाया जाता है। विश्व की इतनी बड़ी संख्या के देशों में भारत जन्य धर्म को श्रद्धा पूर्वक मानाया जाना भारत की प्राचीन विश्वगुरु की अवधारणा को सुस्पष्ट और संपुष्ट करता है। इन देशों का राजनैतिक नेतृत्व परिस्थिति और सामरिकता वश चाहे जो भी बोले किन्तु यहाँ के आस्थावान बौद्ध बंधु भारत भूमि के प्रति अपने बौद्ध जन्य आदर को कभी भी विस्मृत नहीं कर सकते हैं। यही वह तथ्य है जो भारत को विश्वगुरु के स्थान पर विराजित करने के नए अवसर प्रदान कर रहा है। इन देशों में बौद्ध धर्म पहली शताब्दी में ही प्रवेश कर गया था। इन देशों में हजारों की संख्या में सांस्कृतिक और धार्मिक स्मारक, पूजा स्थान, ग्रन्थ, संस्थान, शिलालेख, खगोलीय अनुसंधान केंद्र, ज्योतिषीय संस्थान, व्याकरण सिद्धांत, गणितीय सिद्धांत, विशाल प्रस्तर निर्माण आदि ऐसे अमिट और अक्षुण्ण श्रद्धा केंद्र हैं जो यहाँ भारत का नाम बरबस ही नहीं अपितु श्रद्धापूर्वक लेते रहनें का अवसर प्रदान करते रहते हैं। हजारों वर्षों से इन देशों में ये बौद्ध आधारित विचार संस्थान प्रज्ञा, संज्ञा और विज्ञा के प्रवाह को सतत बनाए हुए हैं, जिसके सकारात्मक उपयोग का समय अब आ गया है। अवसर है कि इन देशों के बुद्धत्व प्रवाह का उपयोग भारत को विश्वगुरु बनानें की दिशा में पुनः प्रारम्भ हो। हम विश्व के दूसरे सबसे बड़े विश्व के प्रथम पांच विशाल धर्मों में से दो धर्म भारत भूमि से उत्पन्न हैं, एक हिंदुत्व और एक बुद्धत्व। भारतीय मूल से अभिन्न रूप से जुड़े इन दो धर्मों के अनुयाइयों की संख्या की दृष्टि से देखें तो गौरव भान होता है। कि हम बौद्ध और हिन्दू मिलकर विश्व के सबसे बड़े धर्म के रूप में स्वीकार्य और मान्य हैं। सम्पूर्ण विश्व में संस्कृति स्त्रोत और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के रूप में हमें जो वैश्विक मान्यता और आस्था प्राप्त है उसमें एक बड़ा कारण बौद्ध धर्म से जुड़ा हुआ ही रहा है, भारत की विश्वगुरु की पृष्ठभूमि और इतिहास की वैश्विक मान्यता बौद्ध की संयुक्त सांस्कृतिक पीठ का ही परिणाम है। भारत के विभिन्न जगत प्रसिद्द शैक्षणिक संस्थानों के विषय में भी यही तथ्य शत प्रतिशत पुनरावृत्त होतें हैं। आज भारत वैश्विक राजनीति में अपनी भूमिका को नए सिरे से तराश रहा है। आज भारत अपने अतीत के अनुरूप विश्व का नेता नहीं बल्कि विश्वगुरु या जगतगुरु बनना चाह रहा है। इन परिस्थितियों में भारत भूमि या हिन्दू जनित बौद्ध धर्म के विश्व भर में फैले अनुयायी, ग्रन्थ, संस्थान और विचार संपदा भारत को गुरुतर स्थान पर विराजित करते दृष्टिगत होते हैं।

बौद्ध धर्म आधारित चार आर्य सत्य एवं आर्य अष्टांग मार्ग समूचे आर्यावर्त ही नहीं अपितु कई यूरोपीय देशों में अपने विचार प्रभाव का विस्तार करता दृष्टिगत हो रहा है। यदि हम इन मूल बौद्ध सिद्धांतों पर विचार करें तो हमें स्वाभाविक ही प्रतीत होता है कि वैश्विक स्तर पर हम किस प्रकार सहज स्वीकार्य ही नहीं वरन श्रद्धेय व पीठाधीश की भूमिका में हैं। आज सम्पूर्ण विश्व में अनेकों राष्ट्र जिन चार बौद्ध जनित आर्य सत्य के मार्ग पर चल रहें हैं वे हैं – दुःख, दुःख कारण, दुःख निरोध तथा दुःख निरोध का मार्ग। इस आर्य सत्य सिद्धांत की वैज्ञानिकता ने विश्व भर में भारतीयता को श्रद्धा से देखने की दृष्टि विकसित कर दी है किन्तु यह दुखद ही रहा कि इस विश्व भर में विस्तारित इस श्रद्धा भाव को हम पिछले कुछ सौ वर्षों के कालखंड में नेतृत्व का भाव नहीं दे पाए हैं। बुद्ध धर्म में आर्य अष्टांग मार्ग में प्रस्तुत किये हैं जो सूत्र दिए हैं उनकी आज विज्ञान आधारित मान्यता निर्विवाद हो गई है। ये अष्टांग मार्ग हैं। सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्य, सम्यक कर्म, सम्यक जीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि। जीवन के प्रारंम्भ से लेकर समाधि तक के प्रत्येक अंश को अपने में समाहित कर लेनें वाले यह आर्य अष्टांग मार्ग अपने आप में एक ऐसी जीवन शैली को समेटे हुए हैं जो आगामी कई हजार वर्षों की अति विकसित होने वाली जीवन शैली में और अधिक से अधिक प्रभावी, प्रासंगिक और प्रदीप्त होते जायेंगे. प्रज्ञा, शील और समाधि आधारित विचार हमें अरिहंत भाव भी देते हैं और समूचे विश्व को ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड का सकारात्मक कालजयी सिद्धांतों, मान्यताओं, विचारों और सकारात्मक उपयोग कर लेने का विचार और क्षमता दोनों भी प्रदान करते हैं। कालातीत या हर समय में संवेदनशील, सटीक और समर्थ जीवन शैली को जन्म देने वाले हमारे हिन्दू-बौद्ध सिद्धांत और संस्कार हमें विश्व नेतृत्व की अद्भुत क्षमता प्रदान करते हैं।

आज की भारतीय विदेश नीति में दो शब्द निर्भीकता और बहुलता से कहे जा रहें है, एक लिंक वेस्ट एंड लुक ईस्ट अर्थात पश्चिम से जुड़ो और पूर्व की ओर देखो अर्थात पश्चिम के तकनीकी सकारात्मक पक्ष को अपनाते चलो और उसमें सांस्कृतिक, शैक्षणिक, विश्व शांति और पर्यावरण आधारित सकारात्मकता प्रवाहित करते चलो। ईस्ट अर्थात पूर्व की ओर देखते रहने और संवाद बढानें की इस नीति के अंतर्गत आने वाले अधिकाँश देशों में बौद्ध धर्म का प्रभाव और भगवान बुद्ध के भारत से जुड़े होने के कारण भारत के प्रति आदर और श्रद्धा भाव इस नीति को परिणामों की ओर तेजी से अग्रसर कर सकता है। दक्षिण प्रशांत महासागरीय 13 देशों का समूह राष्ट्र संघ में एक मुश्त बड़े वोट बैंक के रूप में काम आ सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ में सुरक्षा परिषद् में स्थायी सीट के लिए दशकों से प्रयासरत् भारत के लिए इन 13 देशों से सांस्कृतिक रूप से जुड़े होने को राजनैतिक कूटनीतिक बायस से देखने और तराशने की आवश्यकता है। जो कि भारत के प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रारम्भ हो गई है।

भारतीय वैदेशिक गलियारों में जो दूसरा सकारात्मक शब्द इन दिनों बहुलता से चल रहा है वह है "बौद्ध सर्किट", हिन्दू बौद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से जुड़े हुए देशों को बौद्ध सर्किट से जोड़ना और नए सांस्कृतिक, शैक्षणिक आयामों पर काम करते हुए एक नए नहीं अपितु प्राचीनतम आयाम के नए स्वरूपों पर काम करना अभूतपूर्व अवसरों को जन्म दे रहा है। वस्तुतः हाल के चार-पांच सौ वर्षों की वैश्विक राजनीति सैन्य, आर्थिक, तकनीक और अन्य प्रकार के दृष्टिकोणों से बेहतर प्रभावित रही है। इस प्रकार की राजनीति में परस्पर प्रेम, अहिंसा, गुरुतर भाव, सांस्कृतिक विकास, शैक्षणिक आदान प्रदान आदि शब्दों का प्रचलन कम से कमतर ही नहीं अपितु समाप्त प्राय ही हो गया है। यही वह कोण है जहां से भारत को हिन्दू-बौद्ध पृष्ठभूमि उसे सम्पूर्ण विश्व में चौतरफा सन्देश वाही हो जाने के अवसर प्राप्त हो रहें हैं, बौद्ध सर्किट के राजनैतिक सिद्धांत पर अधिकतम काम से भारत को वैश्विक नेतृत्व की पीठ का स्वाभाविक और नेसर्गिक अधिकारी समझनें के अवसर उत्पन्न किये जा सकतें हैं। भारत-चीन के मध्य आ गए सैन्य और संप्रभुता आधारित तनाव को भी (अति सतर्कता और सचेत रहकर) यदि बुद्धत्व के आधार पर सुलझानें के नए कोणों से प्रयास हो तो यह समूचे विश्व के लिए नूतन और प्रेरणास्पद हो सकता है।

– प्रवीण गुगनानी

+++

अम्बेडकर की वजह से ही मोदी यहां

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर और दलित राजनीति को लेकर छिड़ी होड के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उनकी विरासत पर दाव ठोक दिया है। अरसे से अटके अम्बेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र को 20 महीने के अंदर पूरा करने का भरोसा दिया।

दलित नहीं मानवता का नेता बताया :

मोदी ने कहा कि अगर अम्बेडकर नहीं होते तो आज नरेंद्र मोदी कहां होते मैं आज यहां नहीं होता। उन्होंने आगे जोड़ा कि अम्बेडकर जिन मूल्यों के लिए लड़े और जिए आज भी सरकारों के लिए दलित नेता कहा जाता है, सचाई यह है कि वह मनवता के नेता थे। उन्होंने भारत के संविधान के शिल्पकार बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर को अस्पृश्यता का शिकार बताया।

नीले रंग के साथ सरकार :-

यह एक संयोग ही था कि सोमवार को मोदी केंद्रीय दिल्ली में अम्बेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का शिलान्यास करने आए मंच पर नीले रंग की पृष्ठभूमि के सामने मोदी भी नीली जैकेट पहने हुए थे। अम्बडेकर पर अपना एकाधिकार जताती रही बसपा का रंग भी नीला ही है। लगभग 20 मिनट के भाषण में मोदी ने यह भी सुनिश्चित किया की अम्बेडकर को उनकी सरकार की सोच के साथ खड़ा कर दिया जाए । सूत्रों के मुताबिक इस केंद्र पर लगभग 200 करोड़ रूपये खर्च होंगे । हालकि मोदी इसे राजनीति से परे रखते हैं, लेकिन पूरी कवायद को राजनीति से जोड़कर भी देखा जा रहा है। गौरतलब है कि अम्बेडकर जयंती के अवसर पर न सिर्फ भाजपा ने कार्यक्रम किए थे बल्कि संघ की ओर से भी भव्य आयोजन किया गया था। अम्बेडकर के जीवन पर केंद्रित कर मुखपत्र पॉचजन्य और आर्गेनाइजर की तीन लाख प्रति छापी गई थी ।

बीस माह में पूरा करने का भरोसा :

सोमवार को मोदी ने परोक्ष रूप से यह जता दिया की भाजपा, उनकी सरकार और व्यक्तिगत रूप से यह खुद अम्बेडकर की राजनीति पर आगे बढ़ने वालों में है । अम्बेडकर के प्रति उनकी निष्ठा ही है कि उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय केंद्र को प्राथमिकता में लिया है। यह विश्व चेतना का केंद्र बनेगा ।

सामाजिक और राजनीतिक अस्पृश्यता के भी वे खिलाफ : -

अम्बेडकर के दर्शन को दलितों तक जोड़कर रखे जाने से एतराज जताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा अम्बेडकर हर तरह की अस्पृश्यता के खिलाफ थे, वह सामाजिक हो या राजनीतिक उन्होंने जिस सोच के साथ काम किया वह अभी भी प्रासंगिक है। सरकार के कामकाज के साथ जोड़ते हुए उन्होने कहा कि अम्बेडकर शिक्षा, चुनाव सुधार, श्रम सुधार आदि की बात करते थे। मोदी सरकार भी इस प्रयास में जुटी हैं, कि शिक्षा अंतिम स्तर तक पहुंचे। अम्बेडकर के लिए यही सच्ची श्रध्दांजलि होगी । उन्होंने अपील की कि अम्बेडकर को उनके मूल्यों के साथ अपनाएं और समाज को जोड़े ।

जाहिर है कि परोक्ष रूप से उन्होंने दलित राजनीति कर रहे दलों पर निशाना साधा और साथ ही साथ यह भी संदेश दिया कि अम्बेडकर की विरासत पर भाजपा का भी हक है । ध्यान रहे कि अगले छह महीनों में बिहार विधानसभा चुनाव हैं और वहां मोदी की पिछड़ी जाति को भाजपा भुनाती रही है।

– दैनिक जागरण से साभार

+++

मौसम विभाग, नई दिल्ली में मनाई गयी भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयंती

24 अप्रैल 2015 को अनुसूचित जाति /अनुसूचित जनजाति वैलफेयर एसोसिएशन द्वारा भारत मौसम विज्ञान विभाग, मुख्यालय में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती का आयोजन किया गया जिसके मुख्य अतिथि माननीय डॉ. उदित राज (सांसद) एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय अनु. जाति/जनजाति परिसंघ, विशिष्ट अतिथि के तौर पर माननीय श्री फग्गन सिंह कुलस्ते, चेयरमैन, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति वैलफेयर पार्लियामेंट कमिटी, माननीय डॉ. हर्षवर्धन, केन्द्रीय मंत्री – विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, माननीय श्री वाई.एस. चौधरी, राज्य मंत्री – पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, माननीय सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी, डॉ. शैलेष नायक, सचिव – पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, डॉ. एल.एस. राठौर, महानिदेशक, श्री ए. के.शर्मा– उपमहानिदेशक, श्री ब्रह्म प्रकाश, महासचिव, श्री चरण सिंह, वैज्ञानिक 'ई' व संस्था के संरक्षक, श्री शंकर प्रसाद, संस्था के अध्यक्ष मंच पर उपस्थित थे ।

भारत मौसम विज्ञान विभाग, मुख्यालय में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की जयन्ती के शुभअवसर पर डॉ. उदित राज जी संबोधित करते हुए

भारत मौसम विज्ञान विभाग, मुख्यालय में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती के शुभअवसर पर श्री ब्रम्हप्रकाश जी सम्बोधित करते हुए।

भारत मौसम विज्ञान विभाग, मुख्यालय में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती समारोह में मुख्य अतिथि श्री फग्गन सिंह कुलस्ते और डॉ. उदित राज श्री ब्रम्हप्रकाश को सम्मानित करते हुए।

कार्यक्रम के शुभारंभ में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर व भगवान गौतम बुद्ध के चरणों में उपरोक्त सभी अतिथियों द्वारा पुष्पांजली अर्पित की गई तथा दीप प्रज्वलित किया गया । संस्था के महासचिव श्री ब्रह्म प्रकाश ने संचालन करते हुए कहा कि आज डॉ0 अम्बेडकर जी की महानता को असली रूप में देश ने जाना है कि भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी 14 अप्रैल को कनाडा में अपने भाषण की शुरुआत 'जय भीम' के नारे के साथ की और इसके साथ ही महासचिव ने आज की दलित कर्मचारियों के ठेकेदारी प्रथा पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि अगर सफाई कर्मचारी से लेकर अन्य वर्ग 'घ' कर्मचारियों में अपने पूर्वजों की स्थाई नौकरी नहीं होती तो शायद आज हम यहाँ पर अधिकारी व अन्य सेवाओं में नहीं होते क्योंकि स्थाई नौकरी में पूरा वेतन मिलता था जिस वेतन से हमारे माता पिता ने उच्च शिक्षा तक हमें पहुँचाया और डॉ0 भीमराव अम्बेडकर द्वारा दिये हुए संविधान में आरक्षण का लाभ लेते हुए यहाँ तक पहुँचे हैं, लेकिन आज की ठेकेदारी प्रथा में सबसे ज्यादा दलित वर्ग ही प्रभावित हुआ है, क्योंकि उनको पाँच–छः हजार रूपये में इस मंहगाई के जमाने में घर चलाना भारी पड़ रहा है और सरकारी विद्यालयों की व्यवस्था इतनी लचर हो गई है। कि बिना पढ़े ही बच्चों को पास कर देते हैं। और जब आगे कम्पटीशन होता है, तो वह बच्चा उस कम्पटीशन को पास तक नहीं कर पाता है। यह एक दलित व गरीब समाज के प्रति बहुत ही सोची समझी रणनीति के तहत लाचार और बेकार बनाने की पुरानी जमीदारी परंपराओं पर लाकर खड़ा कर दिया है। क्योंकि आज देश में जो राजनितिक सूझ बूझ, नौकरियों में हिस्सेदारी और दलितों का कम्पटीशन बढ़ा है। उसको रोकने के लिए यही योजना बनाई गई थी। इसलिए आज ठेकेदारी प्रथा दलित समाज को पंगु बना रही है। इस ठेकेदारी प्रथा को उपरोक्त सभी अतिथियों के सामने यही प्रस्ताव रखा कि ठेकेदारी प्रथा समाप्त हो तभी बाबा साहेब डॉ0 भीम राव अम्बेडकर को सच्ची पुष्पांजली अर्पित होगी ।

साथ में विभागीय प्रमोशन में जो डी.ओ.पी.टी. के नियम हैं उन्हें नियमित रूप से लागू करने तथा वैज्ञानिक सहायक से सहायक मौसम विज्ञानी का जो संघर्ष है। की पूरी सर्विस अन्तराल में इस केडर को मौसम विभाग में न्यायपूर्ण प्रमोशन नहीं मिलता । जबकि मौसम विभाग में यह कैडर मौसम विभाग की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है ।

डॉ0 उदित राज जी ने संबोधित करते हुए कहा कि बाबा साहेब ने जो संविधान दिया है, उससे लोगों की जिंदगियाँ बदली हैं और लोगों के जीवन का स्तर बढ़ा है। बाबा साहेब बौद्धिक रूप से ईमानदार थे । उन्होंने शोषण करने वालों और शोषित होने वालों को भी नहीं बक्शा और कहा कि जितना शोषण करने वाला गुनहगार है उतना ही शोषण सहने वाला भी गुनहगार हैं । लेकिन आज के दौर में मानसिक दादागिरी बड़े पदों पर बैठे हुए लोगों में बढ़ी हैं और वे अपने कर्तव्य का भी पूर्ण रूप से पालन नहीं करते हैं और अगर उन्हें याद भी दिलाया जाए कि उन्होंने यह गलती की है तब भी उस गलती को मानने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि उनकी मानसिकता देने की नहीं है । कर्तव्य निभाने की नहीं है, यह सबसे बड़ी बेईमानी हैं और इसके पीछे अगर कोई जिम्मेदार है तो अपने लोग ही जिम्मेदार हैं क्योंकि अधिकतर लोगों ने कई संस्थाएँ खोल रखीं हैं। वे लोग अपने आगे किसी को नहीं समझते । कहते हैं कि हम तो बहुत दिन से आंदोलन कर रहे हैं। लेकिन जब उनके ऊपर कोई मुसीबत आती है तो फिर इधर उधर भागते हैं और मेरे पास भी आते हैं । जब हम उनसे पूछते हैं कि आप तो इतने दिनों से लीडरशिप कर रहे थे, जब आप अपने आप को नहीं बचा पाए तो क्या अपने साथियों को कैसे बचाओगे। तो फिर ऐसी संस्था का फायदा क्या। इसलिए बाबा साहेब के उस शब्द को याद रखना चाहिए कि संगठित रहकर संघर्ष करने पर ही आंदोलन की जीत होती है । इसलिए अगर आप बाबा साहेब को मानते हैं तो परिसंघ में सभी संस्थाएँ एक होकर अपनी मांगों की लड़ाई लड़ें तभी आपकी जीत होगी।

सत्ता में आने से पहले और देश आज़ाद होने से पहले विशेषकर एक ही जाति का देश के लिए लड़ने का हक था लेकिन जब दलित भी देश की आज़ादी के लिए लड़े तब देश में बहुत जबरदस्त क्रांति आई और देश आज़ाद हुआ। आज देश में बाबा साहेब के संविधान के कारण देश के हर नागरिक का देश के ऊपर अधिकार है और आज देश की एकता व अखंडता में दलितों की व सभी जातियों की बराबर की भागेदारी है। इसलिए आज देश को कोई छू भी नहीं सकता । और देश आज मजबूत है। आज देश के दलितों को भी बाबा साहेब के संदेश को अपनाते हुए एक होकर परिसंघ के माध्यम से अपनी बात मनवाने के लिए एक हों ।

भारत मौसम विज्ञान विभाग, मुख्यालय में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयन्ती समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय मंत्री, डॉ0 हर्षवर्धन

माननीय वाई.एस. चौधरी जी ने कहा कि देश भिन्न भिन्न जातियों में बंटा हुआ था और अस्पृश्यता का जबरदस्त दौर था । उसी दौरान डॉ. अम्बेडकर जी ने ऐसे संविधान की रचना की कि जिसमें दलित ही नहीं देश की सभी जातियों को न्याय व सम्मान मिला । बाबा साहेब के संविधान को दलितों को ही नहीं देश के सभी लोगों को मानना चाहिए, क्योंकि बाबा साहेब दुनिया के लिए भारत के द्वारा मानवता के नाम पर संदेश देने वाले पहले व्यक्ति थे ।

माननीय सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी ने बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि बाबा साहब के योगदान को कोई भुला नहीं सकता । और बाबा साहेब ने भगवान गौतम बुद्ध का जो धर्म अपनाया । उससे समाज की बुराईयाँ खतम करने के लिए ही भगवान गौतम बुद्ध का संदेश दिया और स्वयं के लिए भी उन्होंने कहा कि अगर मेरा बस चलता तो मैं भी बौद्ध धर्म में पैदा होती और इसका मुझे स्वभिमान होता । इसी बात पर उन्होंने डॉ0 उदित राज जी को दलितों की व सभी जातियों की मानवीय आधार बात उठाने वाले साधु की उपाधि दी और कहा कि डॉ. उदित राज जी की कोई जाति नहीं हैं, वह एक साधु की तरह हैं और बहुत अच्छे इंसान हैं।

माननीय केन्द्रीय मंत्री डॉ0 हर्षवर्धन जी ने कहा कि भारत में असंख्य महापुरुषों में से बाबा साहेब डॉ0 भीम राव अम्बेडकर जी को दुनिया में सबसे उँचा स्थान दिया और कहा कि बाबा साहेब के द्वारा भारत के माध्यम से दुनिया को मानवता का संदेश देने वाले महापुरुष डॉ0 अम्बेडकर ही थे । डॉ0 हर्षवर्धन ने राम, कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु की बराबर डॉ0 भीम राव अम्बेडकर को माना । आज 14 अप्रैल व 6 दिसंबर को ही हम लोग मानते हैं लेकिन डॉ0 अम्बेडकर जी के विचारों को हर रोज अपने जीवन में उतारना चाहिए और साथ की कहा कि अपने बच्चों को एक दिन बाबा साहेब के बारे में जरूर बताना चाहिए । आज भारत विकास कर रहा है इससे देश का ही भला है और देश में सबसे नीचे जीवन यापन करने वालों का भी भला होगा । डॉ0 हर्षवर्धन जी ने महासचिव ब्रह्म प्रकाश द्वारा उठाई गई विभागीय समस्याओं को भी सुलझाने का वादा किया और सचिव महोदय की ओर इंगित करते हुए कहा कि तुरंत ही इन समस्याओं का हल किया जाए।

श्री फग्गन सिंह कुलस्ते जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि एस.सी./एस.टी के हकों के लिए पार्लियामेंट में समय समय पर बात उठाई जाती है और डीओपीटी को भी नियमों को लागू करने के लिए समय–समय पर कहा जाता है, लेकिन इन सब काम को करने के लिए इच्छा शक्ति होनी चाहिए। हमने वाजपेयी सरकार में नागपुर एयरपोर्ट पर बाबा साहेब की प्रतिमा लगवाई क्योंकि बाबा साहेब एक जाति के नहीं थे बाबा साहेब सभी के लिए थे । चाहे वह शिक्षा का स्तर हो चाहे वह न्यायपालिका या नौकरी का स्तर हो, सभी को बराबर का हक दिया है । मगर बाबा साहेब के जन्म दिवस पर तो लोग दलितों के हितों की बात करते हैं लेकिन जब दलितों के लिए सुप्रीम कोर्ट या पार्लियामेंट कोई आदेश करता है तो उसको लागू करने के लिए उस पर समीक्षा समिति बैठाई जाती है और उसको लटकाया जाता है, लेकिन अगर दलितों के बुकसान और बाकी लोगों के फायदे की बात हो तो उसे लागू करने के लिए 24 घंटे के अंतराल में नीचे से ऊपर तक उसे लागू कर दिया जाता है । इस मानसिकता के खिलाफ लड़ने के लिए आप सभी को बाबा साहेब के संदेश एकजुट होकर संघर्ष करने की आवश्यकता है, जिससे आपके हितों के लिए न्याय हो। यही डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।

श्री यू.पी.सिंह जी, वैज्ञानिक 'ई', पूर्व डिप्टी लेबर कमिशनर श्री हरी किशन संतोशी, श्री महेन्द्र सिंह, वैज्ञानिक सहायक, श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक सहायक आदि सभी ने भी अपने–अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम में उपस्थित पूर्व जज श्री धरमपाल जैनवाल, पूर्व संयुक्त कमिशनर, श्री जगत सिंह टॉक (आई. आर.एस.), पूर्व जनरल मैनेजर वी.एस. एन.एल., श्री एस. पी. सिंह, सेवानिवृत श्री राम चरण टैगोर तथा संस्था के पदाधिकारी कोषाध्यक्ष श्री लक्ष्मीकांत, श्री विनोद गौहर, सह सचिव, श्री जय प्रकाश, श्री ललित कुमार, श्री बसु मित्र, श्री पी.के.वर्मा, श्री एम.एस. निमेश, श्री राधेश्याम, श्री सी. बसेरा आदि ने कार्यक्रम में भाग लिया। परिसंघ के पदाधिकारी डॉ. धनंजय, श्री रविन्द्र सिंह, श्री नेत राम ठगेला, श्री भानू पुनिया, श्री सत्य नारायण, श्री दया राम, परमेश्वर राव घंटा, श्री एन.डी.राम, श्री आर.सी. मथुरिया, श्री संजय राज, श्री इन्द्रेश, श्री गणेश येरेकर, श्री सुशील बरखने, श्रीमती मंजू आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण सहयोग किया ।

–ब्रम्हप्रकाश
राष्ट्रीय सचिव

+ + +

महाबोधी विहार बोध गया मुक्ति आंदोलन

भारत की नागवंशी सिंधु संस्कृति बहुत प्राचीन है। आज से आठ हजार साल पहले भारत में मातृसत्ताक परिवार पद्धति थी। चार हजार साल पहले आर्य ने भारत पर हमला किया, भारतीयों को दुष्टता से हरा दिया और यहां के मूलनिवासियों को गुलाम बना दिया। वेदों के पुरुष सूक्त द्वारा वर्णव्यवस्था निर्माण की गयी और भारतीय समाज में उसी के द्वारा जातीयता निर्माण की गयी। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर कहते हैं कि वर्णव्यवस्था के कारण भारत गुलाम हुआ। भारत की सभी महिलायें, ओबीसी.,एस.सी.,एस.टी को शुद्र कहा गया। उनको ज्ञान का अधिकार नहीं दिया। आर्य लोगों ने यज्ञ के नाम से गाय, बैल, घोड़ा की हत्या की और उसका मांस वे खाते थे, ऐसा बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने कहा है। आर्य के खिलाफ नागवंशी, कुणबी, शंबर राजा, बली राजा आदि ने संघर्ष किया पर आर्यो ने उनकी हत्या की थी।

तथागत गौतम बुद्ध का उदय ई. स. पूर्व 563–483 भारत में हुआ, उन्होंने सबसे पहले आर्यो के खिलाफ जन आंदोलन चलाया। उन्होंने स्वतंत्रता, समता, बंधुता, न्याय इन महान तत्वों का उदघोष किया। सभी महिलाओं और पुरुषों को बुद्ध धर्म में प्रवेश दिया। विज्ञानवाद का प्रचार किया। उन्होंने वर्णव्यवस्था, जाति व्यवस्था, ईश्वर, आत्मा, नर्क, यज्ञ और अंधविश्वास का विरोध किया। उन्होंने प्रज्ञा, शील, करूणा, दया, क्षमा, शील, शांति, अहिंसा, सत्य, प्रेम, मैत्री, स्वतंत्रता, समता, बंधुता, न्याय इन तत्वों का प्रचार किया और जनता से उसे अंगीकार करने का आवाहन किया। इससे संपूर्ण भारत बौद्धमय हो गया। बौद्ध धर्म मानवतावादी तत्वज्ञान है, उसी वजह से संपूर्ण भारत बुध्दमय हो गया। बुद्ध के बाद आर्यो का महत्व कम हुआ था। पूरे भारत में मानवतावाद निर्माण हुआ।

सम्राट अशोक का धम्म प्रचार ई.स. पूर्व 304-ई.स.पूर्व 232:-

कलिंग प्रदेश पर अशोक सम्राट ने हमला किया। उस प्रदेश का राजा खारवेल और उनकी प्रजा को हरा दिया। उस संग्राम में बहुत लोग मारे गये। बहुत जख्मी हो गये, बच्चे अनाथ और महिलायें विधवा बन गयी। जिसका सम्राट अशोक पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनको रात और दिन में नींद नहीं आती थी। बाद में भंते निग्रोध जो अशोक सम्राट के भाई का लड़का था, ने बताया की किसी के दिल को हिंसा से नहीं जीता जा सकता उसे प्रेम तथा मैत्री से जीतना चाहिये। उन बातों को सुनकर अशोक सम्राट बुद्ध धम्म की ओर आकृष्ट हुए। भन्ते मोगली पुत्त तिष्य ने अशोक सम्राट को बुद्ध धम्म का ज्ञान, तत्वज्ञान और अहिंसा, प्रेम, मैत्री, प्रज्ञा, शील, करूणा तथा सत्य के बारे में बताया। इन तत्वों के कारणे सम्राट अशोक ने हिंसा बंद कर दी और वे बुद्ध बन गये, सम्राट अशोक ने भन्ते उपगुप्त के साथ में बुध्द के जन्मस्थल लिंबुनी की यात्रा की यहां एक स्तंभ खड़ा किया। सारनाथ में पहला प्रवचन हुआ था। वहां पर एक स्तंभ खड़ा किया। सम्राट अशोक की एक पत्नी बिदीशा से थी यहां सांची में सम्राट अशोक ने जगप्रसिद्ध स्तूप बनवाया। कुशीनगर में बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ। यहॉ पर स्तूप बनाया।

बोध गया में महाबोधी विहार का निर्माण :-

सम्राट अशोक ने बोध गया की यात्रा की, जहां बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ, उस पीपल बोधि वृक्ष का दर्शन किया। वहां पर भव्य विहार निर्माण किया। बोध गया दुनिया का शांति, प्रेम तथा ज्ञान का प्रतीक है। सम्राट अशोक ने 84 हजार शिलालेख तथा विहारों का निर्माण करवाकर प्रजा का कल्याण किया। सम्राट अशोक ने चीन, थाईलैंड, श्रीलंका, ब्रम्हदेश, अफगानिस्तान, सिंध, कश्मीर, ग्रीक आदि देशों में धम्म प्रचार के लिये बौद्ध भिक्षुओं को भेज दिया। उन्होंने अपने पुत्र महेंद्र तथा पुत्री संघमित्रा को धम्मप्रसार के लिये श्रीलंका में भेजा था। अनेक देशों से लोग बोध गया तथा लिंबुनी आदि क्षेत्रों के दर्शन के लिये आते थे। सम्राट अशोक की सबसे छोटी पत्नी तिष्यरक्षिता ने गुस्से में आकर बोधि वृक्ष को जलाया था । सम्राट अशोक ने उस राज्य में पंडितो के हाथ से पूजा कराना बंद किया था, इसलिए पंडितो का महत्व कम हो गया।

सम्राट अशोक का पौत्र बृहद्रथ की हत्या पुष्यमित्र शुंग ने ई.स.पूर्व 185 की थी :-

सम्राट अशोक का पुत्र दशरथ था, दशरथ का पुत्र जल्लोक था, जल्ललोक का पुत्र बृहद्रथ था, उस वक्त पंडितो का महत्व कम हुआ था। उनका कोई धार्मिक महत्व नहीं रहा था। सभी जनता बौद्ध बनी थी। पंडित लोग बौद्ध बने थे, उस समय कुछ पंडितों ने पुष्यमित्रशुंग के नाम के पंडित को आगे किया। षड्यंत्र करके वह बृहद्रथ की सेना में घुस गया और आगे चलकर सेनापति बन गया । सेना का निरीक्षण के वक्त धोखे से पुष्यमित्रशुंग ने बृहद्रथ की भरी दरबार में हत्या करके वैदिक धर्म की पुनरर्स्थापना की। मनुस्मृति लिखकर बहुजन लोगों को ज्ञान बंदी, सैन्य बंदी, रोटी–बेटी बंदी, व्यापार बंदी, सिंधु बंदी, आदि पाबंदी लगा दी और महिलाओं तथा बहुजनों को गुलाम बनाया। बद्ध विहार नष्ट किये, शंकराचार्य कुमारील भट ने बौद्ध धम्म पर हमले किये तथा पंडित राज शांक ने बोधि वृक्ष जलाया उसे बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने प्रतिक्रांति कहा है। उन्होनें क्रांति और प्रतिक्रांति जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे हैं। ई. स. 1203 तक बौद्ध धम्म नामशेष हुआ। महाबोधि विहार की जगह जंगल निर्माण हुआ। सब तरफ अंधेरा छा गया। पृथ्वीराज चौहान के समय में बहुत सारी बैल गाड़ियों में रेत (बालू) लाकर बौद्ध गया में डाली गयी उस में महाबोधि विहार तथा बोध गया दबाई गयी। उसके बाद बख्तयार खिलखिला ने नालंदा विद्यापीठ को जलाया, बौद्ध भिक्षुओं का कत्ल करके सम्राट अकबर के जमाने में मंहत वहां रहता था। उसको विष्णु का मंदिर का स्वरूप दिया गया। बौद्ध विहार के खंडहर देखना पाप है। ऐसा झूठा प्रचार किया गया और ऐसा बताया गया की बौद्ध विहार खंडहर पर जो भी जाए उस पर पत्थर फेंकना चाहिये। बुद्ध तथा महामाया आदि प्रतिमाओं को खराब किया गया।

अंग्रेजी शासन :-

भारत में अंग्रेज सोलहवीं शताब्दी में आये। व्यापार करते हुए उन्होनें भारत को कब्जे में ले लिया अंग्रेजों ने भारत में कानून व्यवस्था कायम की। उन्होंनें ही भारत में सबसे पहले कानून समता निर्माण किया अंग्रेजों ने ही विश्वविद्यालय, कोर्ट, पुलिस प्रशासन, रेलवे, पोस्ट ऑफिस, पी.डब्लु.डी और अस्पताल शुरू किये गए। इतना ही नही अंग्रेजों ने सम्राट अशोक कालीन खंडहर और बौद्ध स्तूपों की खोज की, 1750 में फॅन्थेलर की सर जेम प्रिंसेस ने सात साल कड़ी मेहनत के बाद सम्राट अशोक के शिलालेख 1838 में पढ़ें। अंग्रेजो ने श्रीलंका जाकर भाषा की पढ़ाई की, तब उन्हें वैभवशाली बौद्ध विरासत और सम्राट अशोक काल के बारे में पता चला। कॅनिगहॅम, सर जॉन मार्शल (सिंधु संस्कृति 1922 की खोज) और रॉबर्ट गिल (अजंता गुफाओं की खोज 1829) की। डॉ. डेविडस ने अंग्रेजी में बौध्द धम्म का ग्रंथ लिखा। इसी वजह से पूरी दुनिया में विशेषकर यूरोपियन लोगों को और भारत के लोगों को बुद्ध तथा सम्राट अशोक का इतिहास का पता चला।

गवर्नर विल्यिम बेर्टिंक 1820:-

गर्वनर बिल्यिम बेर्टिंक भारत के गवर्नर थे। उन्हें बौद्ध धम्म का बहुत आर्कषण था। उन्होनें तिब्बत में जाकर बौद्ध धम्म की पढ़ाई की। उन्होनें सती प्रथा बंद की थी। उन्होंने तिब्बत में बोध गया के बारे में एक ग्रंथ भी पढ़ा । उनके मन में आया कि भारत में जाकर बोध गया का दर्शन करेगें। इसलिये वे बोध गया गये जब वे वहां पहुचे तब उन्हें बड़ा सदमा लगा। बोध गया में कहीं पर भी बोध गया का तथागत बुद्ध का ज्ञान केंद्र और विहार कहीं नजर नहीं आये। उन्हें आश्चर्य लगा की, बोध गया कहां हैं। वहॉ पर हर तरफ रेत फैली हुई थी। क्योंकि राजा पृथ्वीराज चौहन के समय में सैकड़ो बैल गाडियों में रेत (बालू) लाकर डाली गई थी और महाबोधी विहार और बुध्द गया दबा दी गई। उसके बाद में बेंटिंक के आदेश पर पूरी रेत हटा दी गई। और वहॉ पर नीचे महाबोधी विहार के अवशेष नजर आये, अंग्रेजों की इस ओर नजर थी और फिर बाद में दुनिया को महाबोधि विहार और बोध गया का पता चला। वहां पर पाखंडी पंडितो ने झूठा प्रचार किया कि गौतम बुद्ध विष्णु के अवतार हैं। उन्होनें कर्मकांड किया, कब्जा किया।

आनागारीक धम्मपाल का आगमन 1891:-

प्रसिद्ध भंते अनागरीक धम्मपाल का जन्म श्रीलंका में हुआ था। श्रीलंका में चारो ओर बौध्द धम्म फैला हुआ है। वे भारत में बुद्ध की जन्मस्थली और बोध गया, महत्वपूर्ण स्थलों का दर्शन करना चाहते थे। इसलिये वे भारत आये थे। वे बुद्ध गया गये, तो उन्हें भयानक बातें नजर आई। बुद्ध के विपरीत उन्हें विष्णु की पूजा और पंडितो का धार्मिक राज दिखाई दिया। उन्होनें पंडितो को कब्जा हटाने के लिये संघर्ष शुरू किया। उन्होनें महाबोधि सोसायटी की स्थापना की, उन्होनें मासिक पत्रिका शुरू की। अनेक लेख अदालत गये। उन पर जातिवादी लोगो नें हमले किये। 1893 में शिकागो में वही सर्व धर्म परिषद लेकिन अनागारीक धम्मपालजी की कोशिश करने से स्वामी विवेकानंदजी को समय पर अवसर दिया गया। स्वामी जी ने महा बोधी विहार मुक्ति के लिये आंदोलन किया।

1949 का महाबोधी विहार का कानून :-

यह कानून सरकार ने बनाया, जिसमें हिंदू पंडितों को लिया गया। कुछ बौध्द सदस्य लिये गये। हिंदू कलेक्टर को उसका अध्यक्ष बनाया गया। पंडित लोगों ने कर्मकांड शुरू किये। इसलिये बुद्ध का असली संदेश दुनिया तक नहीं जाता। बोध गया में अमेरिका, चीन, जपान, इंग्लैंड, कोरिया, ब्रम्हदेश, श्रीलंका, थाईलैंड, भारत और दुनिया के कई देशों के यात्री दर्शन के लिये आते हैं और बहुत दान करते हैं। ये दान छीनकर वास्तव में पंडितो ने वहॉ कब्जा किया है। उनको यहा से हटना चाहिये और अभ्यासु बौध्द विद्वानों के हाथ में विहार का प्रबंधन देना चाहिये। 1956 में बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर लाखों लोगों को लेकर बौद्ध धर्म अपनाया। महाबोधी विहार का पुराना कानून बदल कर केंद्र तथा राज्य सरकार में नया कानून लाना जरूरी है। वह मानवता के हित में होगा।

– सुरेश ए. घोरपडे
पूर्व न्यायाधिश
मो.नं. 9021414204

+++

ग्रामसभा की बैठक के दौरान उपसरपंच ने की फायरिंग आदिवासी सरपंच कुर्सी पर बैठा तो लात मारकर गिरा दिया

सतना में ग्रामसभा की बैठक में आदिवासी सरपंच का कुर्सी पर बैठना उपसरपंच को इतना बुरा लगा कि उसने सरपंच को कुर्सी समेत लात मारकर गिरा दिया।

आरोप है कि उपसरपंच और उसके साथियों ने कट्टे से फायर किए। इसमें सरपंच समर्थक बद्री प्रसाद पाण्डेय, बलभद्र पाण्डेय, रमेश पाण्डेय तथा धनेंद्र पयासी गोली लगने से घायल हो गए। सीने में गोली धंसने से धनेंद्र की हालत गंभीर बताई जा रही है। उसे रीवा रेफर किया गया है। ग्रामीण ने पुलिस को बताया कि भवगती सिंह, दिलीप सिंह तथा आदित्य सिंह कट्टे से फायर कर रहे थे। वारदात के बाद से सभी आरोपी फरार हैं।

जिले के भंवर गांव में चुनाव के बाद मंगलवार को पंचायत की पहली ग्राम सभा थी। रबिया कोल गांव का सरपंच है और उपसरपंच गांव के ठाकुर भगवती सिंह हैं। सभा के दौरान जैसे ही सरपंच रबिया कोल मुख्य कुर्सी पर बैठने के लिए पहुंचा तो उपसरपंच ने आपत्ति जताई और खुद कुर्सी पर बैठने के लिए आगे आ गया। इससे सरपंच के समर्थकों ने विरोध करते हुए जबरन सरपंच को कुर्सी पर बैठा दिया। यह बात भगवती सिंह को नागवर गुजरी । उसने कुर्सी को लात मारकर सरपंच को नीचे गिरा दिया। गांव के ही बद्री प्रसाद पाण्डेय और उनके परिजन भी बीच बचाव करने के लिए पहुंच गए। तभी भगवती ने फायर कर दिया।

– दैनिक जागरण से साभार

माननीय डॉ. उदित राज द्वारा संसद में उठाए गए मुद्दे

अतारांकित प्रश्न (20 अप्रैल, 2015)

डॉ. उदित राज (उत्तर–पश्चिम दिल्ली) :

क्या नागर विमानन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

क) क्या पिछले पंद्रह वर्षो में भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के पायलटों की कोई नियुक्ति हुई है ?

ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरे क्या हैं और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण है ?

ग) क्या अन्य श्रेणियों के पायलटों की भर्ती की गई है और उन्हें वह प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया है जो केवल अ.ज./अ.ज.जा.के अभ्यर्थियों को उपलब्ध है ?

घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरे क्या हैं और विगत पंद्रह वर्षो मे सामान्य श्रेणी के कितने पायलटों की नियुक्ति की गई है और

ड) क्या सह–पायलट की एक लंबित रिक्ति जो अ.जा. श्रेणी से संबंधित है, के लिए कोई निवेदन प्राप्त हुआ है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरे क्या है और उस पर क्या कार्रवाई की गई है ?

उत्तर

नागर विमानन मंत्री (श्री अशोक गजपति राजु पुसापति)

क) तथा ख) जी, नहीं। वर्ष 2006 में पॉयलट के अनुसूचित जाति के एक पद का विज्ञापन दिया गया था, तथापि इस पद हेतु पात्रता मानदंडो को पूरा करने वाले किसी भी उम्मीदवार द्वारा आवेदन नहीं दिया गया था।

ग) तथा घ) पिछले पन्द्रह वर्षो में सामान्य वर्ग से संबद्ध छः पॉयलटों तथा तीन सह–पॉयलटों की भर्ती की गई है परन्तु उन्हें किसी प्रकार का नियोजन पूर्व प्रशिक्षण नहीं दिया गया था।

ड.) जी, नहीं। हाल ही में इस पद के लिए विज्ञापन जारी नहीं किया गया है।

शून्य काल के दौरान (24 अप्रैल, 2015)

डॉ. उदित राज (उत्तर–पश्चिम दिल्ली) : सभापति महोदय, नेशनल इंस्टीट्युट ऑफ टेक्नोलॉजी में सभी वर्ग के लोगों को टीचिंग फैक्लटी और स्टॉफ में होना चाहिए। दिल्ली में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी है। अप्रैल, 2014 में स्टॉफ की भर्ती के लिए एडवर्टिजमेंट निकाला गया था, 20 उम्मीदवारों में एक भी शिडयूल कास्ट का नही था। नवम्बर 2014 में भी टीचिंग स्टॉफ के लिए एडवर्टिजमेंट निकाला था, उसमें भी कोई एससी नही था। जब आरटीआई से स्क्रिटमेंट रूल मांगे गए तो उन्होंने कहा कि इसे आप गुगल पर देख लीजिए। टीचिंग एग्जामिनेशन का पार्शियल रिजल्ट घोषित किया गया । मैं आपके माध्यम से एचआरडी मिनिस्ट्री का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं that NIT in not above the Constitution. Rules of reservation must be applied there also. The Director and the Chairamn of the NIT in Delhi are flagrantly violating the reservation rules. एचआरडी मिनिस्ट्री का ध्यान इस महत्वपूर्ण विषय पर आकृष्ट करना चाहता हूं, मेरे पास इससे संबंधित बहुत फैक्ट्स है, but thank you so much for giving me an opportunity to say a few words.

प्रश्न काल के दौरान (24 अप्रैल, 2015)

डॉ. उदित राज (उत्तर–पश्चिम दिल्ली) : धन्यवाद मैडम, आपने मुझे प्रश्न पूछने का का मौका दिया ।

मैडम, हमारे देश में कंपनीज बहुत रिलक्टेंट होती हैं। जैसे अभी कंपनीज में वीमेन डायरेक्टर्स की नियुक्ति की बात आई है। अभी जर्मनी में जर्मनी सरकार ने, वहां की चांसलर यह मैडेटरी किया है कि 30 प्रतिशत टॉप रैंकिग फीमेल कंपनीज में ली जांएगी। वहां की चांसलर मर्कल ने जर्मनी में 30 प्रतिशत रिजर्वेशन लागू किया है। हमारे यहां दिक्कत है कि एक तरह से मेंटल ब्लॉक है, कंपनीज सोचती हैं कि इससे घाटा होगा, जबकि जर्मनी, अमेरिका आदि सभी देशों में ऐसा होता है। डेढ़–दो साल पहले की फिगर है कि 150 के आस–पास ब्लैक ओरिजिन के चीफ एग्जीक्युटिव ऑफिसर्स की कंपनी में कार्यरत थे। अमेरिका की बड़ी–बड़ी कंपनीज जब लाभांश डिक्लेयर करती हैं, तब यह भी डिक्लेयर करती हैं की कितनी महिलाओं, एथनिक ओरिजिन के लोगों, ब्लैक्स, हिस्पैनिक और एबोरिजिन्स को जॉब्स दिए। मैं आपके माध्यम से माननीय वित्त मंत्री जी से अनुरोध करना चाहता हूं कि लोगों को सेंसिटाइज करें और कंपनीज को कहें कि अगर ऐसे वीमेन डायरेक्टर्स बनाते हैं, शिडयूल्ड कास्ट्स लोगों को डायरेक्टर बनाती हैं तो इससे कंपनी को घाटा नहीं होगा, बल्कि उनकी स्किल अपग्रेड करके ऐसा किया जा सकता है और इससे उनका काम बढ़ेगा। हाल ही में हुई एक रिसर्च से पता चलता है कि जहां पर वीमेन डायरेक्टर्स हैं, उन्होंने ज्यादा अच्छा काम किया है। इसके लिए उनको सेंसिटाइज करें। मैं सरकार को धन्यवाद देता हूं कि सरकार एफर्ट कर रही है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय पर ग्रान्ट पर चर्चा (27 अप्रैल, 2015)

डॉ. उदित राज (उत्तर–पश्चिम दिल्ली) : धन्यवाद मैडम, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया, इसके लिए अपको धन्यवाद देता हूं

आज सदन में डिमाण्ड्स फॉर ग्राण्ट्स अंडर दि कंट्रोल ऑफ मिनिस्ट्री एचआरडी पर चर्चा हो रही है। जो पैसा दिया जा रहा हैं, उसका मिसयूटिलाइजेशन, अंडरयूटिलाजेशन भी बहुत हैं। माननीय मंत्री जी कोशिश कर रही हैं। जैसे दिल्ली यूनिवर्सिटी में ओबीसी के लिए जो पैसा दिया, उसे वहां के वाइस–चांसलर ने डायवर्ट कर दिया, उसी तरीके से शिडयूल्ड कास्ट्स कंपोनेंट प्लान में जो पैसा शिडयूल्ड कास्ट्स स्टूडेंट्स की हेल्प करने के लिए दिया गया था, वर्ष 2013–14 में उसमें से केवल तीन प्रतिशत पैसा खर्च किया गया और 97 प्रतिशत पैसा खर्च नहीं हो सका। इस तरह की चीजें हो रही है। केन्द्रीय विद्यालय के बारे में भी मंत्री जी चिन्तित हैं। हम लोगों को जिस तरह की विरासत मिली है, उसे दुरूस्त करना है। वहां पर ट्रांसफर–पोस्टिंग में रूल्स–रेगुलेशन्स की बहुत बेंडिग की गयी, उनको ट्विस्ट किया गया हैं। सरकार और मंत्री महोदया से मैं आपके माध्य से अनुरोध करना चाहता हूं कि शिक्षा को इस तरह बनाया जाए कि जो स्टूडेंट्स शिक्षित होकर निकल रहे हैं, वे अपनी जिम्मेदारी एवं नैतिकता को समझ सकें। हमारे कॉलेजेज, यूनिवर्सिटीज और स्कूल्स स्टूडेंट्स को यह भी नहीं बता सकें कि सफाई करना चाहिए। हमारे यहां की एजुकेशन का इतना फेल्योर रहा कि प्रधानमंत्री जी को इसके बारे में कहना पड़ा। इसलिए हमें शिक्षा में बहुत परिवर्तन करने की जरूत है।

under Rule 377 on 20th April, 2015

As per recent reports from the National Sample Survey Organization, it is seen that the gap between monthly average household expenditures of differnt communities compared to upper have, in most cases, increased in 2011-12 form 1999-2000 as is listed below.

Gap between aveage monthly household expenditures of different communities compared to upper casted (%)

Sample	Rural			Urban		
period	St	SC	OBC	St	SC	OBC
2011-2012	-53	-37	-19	-48	-60	-43
199-2000	-49	-38	-22	-45	-65	-37

I urge the Government to take suitable measures, as deemed fit, to bridge the gap in monthly average household expenditures among SCs, STs and OBCs compared to upper castes.

UNSTARRED QUESTION ON 22 th April 2015

Dr. Udit Raj

Will the Minister of Human Resource Development be pleased to state:

A) Whether the Goverment has received representation on wide divergent rates of pre-matric Scholarships paid by the Misistry of Human Resource Development and Ministry of Minority affairs.

B) If so, the details thereof;

C) The rates of the scholarships of these two ministries in the Staste of Utter Pradesh, Madhya Pradesh, West Bengal, Andhra Pradesh and Bihar for 4th and 9th standard students belonging to SC/ST communities and minonities;

D) The reasons and justification for lower rates of scholarships paid to poor Scheduled Castes (SCs)/ Scheduled Tribes (STs) students as compared to better off minoritry students and

E) The action taken/being taken by the Government to provide uniform rates of scholarships to SCs/STs, Muslims, Christians, Sikhs and Buddhists students ?

Answer

(a) to (e): The Department of School Education & Literacy, ministry of Human Resource Development is administering Centrally Sponsored "National Means-cum-merit Scholarship Scheme (NMMSS)" with the objective to award scholarships to meritorius students of economically weaker sections to arrest their dropout at class VIII and encourage them to continue their study at secondary stage. One lakh scholarships of Rs.6000/- per annum (Rs.500/- per month) per Student are awarded to selected students of IX every year and their continuation/renewal in classes X to XII for study in Government, Government-aided and Local body schools under the scheme. Scholarship rate is uniform @Rs.500/- per month for all students of classes IX to XII of all States/UTs irrespective of community/ caste as well as State /UT.

The Ministry of Minority Affairs implements three Scholarship schemes for the Education Empowrement of students belonging to minority commnuities. The schemes are pre-matric Scholarship, post-matic scholarship and Merit-cum- Means based scholarship Scheme. The rates of the said scholarship Schemes are annexed.

Features and Rate of pre-matric, Post-matric, Merit-cum-means Based scholarship Schemes and MANF for students belonging to the minority commnuities.

Common Features :

Eligibility

i) Minimum 50% marks, ii)30% earmarked for girl students, iii) two students in a family and iv) preference to means rather than marks.

I) Rates under Pre-Matric Scholarship Scheme:

S. No.	Item	Hostellers	Day Scholars
1.	Admission fee from class VI to X	Rs.500/-p.a. Subject to actuals	Rs. 5000/-p.a. Subject to actuals
2.	Tuition fee from class VI to X	Rs. 350/- p.m Subject to actuals.	Rs.350/-p.m subject to actuals
3.	Maintenance allowance will be payable for all period not exceeding 10 months in an academic year.		
4.	(i) Class i to V	Nil	Rs. 100/-p.m.
	(ii) Class VI to X	Rs. 600/-p.m. Subject to actuals	Rs. 100/-p.m.

Income ceilling of Parents/ guardian : Rs. 1 lakh per annum.

गुरू तेग बहादुर अस्पताल, दिल्ली में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती मनाई गई

28 अप्रैल, 2015 को गुरू तेग बहादुर अस्पताल, दिलशाद गार्डेन, दिल्ली में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की 124 वीं जयन्ती समारोह धूम-धाम से बनायी गयी।

इस अवसर पर एस.सी/एस.टी वर्ग के साथ अत्याचार, भेदभाव और Atrocity Act-1989 का आज के संदर्भ में उपयोगिता व क्रियान्वयन् विषय पर परिचर्चा आयोजित की गयी।

इसकी जानकारी देते हुए संघ के अध्यक्ष डॉ0 धनंजय कुमार ने बताया कि आयोजित परिचर्चा पर श्री के0 एल. राजौरा (अधिवक्ता), श्री हरीश कुमार (अधिवक्ता), श्री सुधीर हिलसियान (वरिष्ठ सम्पादक), अम्बेडकर फाउण्डेशन, भारत सरकार) ने विस्तृत रूप से उपस्थित अतिथियों को संबोधित तथा अनुसूचित जाति/जन जाति अत्याचार निवारण अधिनियम-1989 के बारे में जानकारी दी तथा बताया कि कैसे आज के समय में इस अधिनियम की उपयोगिता बढ़ गयी है तथा इसी तरीके से क्रियान्वयन् की आवश्यकता है, जिससे एसी/एसटी वर्ग को न्याय एवं अधिकार मिल सके।

इस समारोह के मुख्य अतिथि, सांसद व संरक्षक डॉ0 उदित राज जी ने उपस्थित लोगों को शुभकामनायें दी तथा बताया कि हम लोगों के लगातार प्रयास से सरकार ने 15, जनपथ पर अम्बेडकर इन्टरनेशनल सर्किट बनाने का निर्णय लिया है। जो कि करीब 20 महिने में बनकर पूरा हो जायेगा। इस इन्टरनेशनल सर्किट के बन जाने के बाद भारतवासियों को बाबा साहेब अम्बेडकर के विचारों और कृतियों के बारे में विस्तृत रूप से जानने का मौका मिलेगा तथा अम्बेडकर साहेब का विचार पूरे विश्व में प्रचारित और प्रसारित होगा। साथ ही यह जानकारी दी की भारत सरकार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय बुद्ध पूर्णिमा दिवस समारोह 4 मई, 2015 को तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में 9 बजे से आयोजित किया जा रहा है। यह हमारे लिए व समाज के लिए सम्मान की बात है। डॉ0 उदित राज जी ने परिचर्चा में भाग लेते हुए बताया कि SC/ST Atrocity Act-1989 को कड़ाई से लागू करने की आवश्यकता है। जिससे इस समाज पर जुल्म, अत्याचार और भेद-भाव करने वालो पर लगाम लगायी जा सके।

इस अवसर पर अनुसूचित जाति/जन जाति आयोग, भारत सरकार के सदस्य श्री राजू परमार जी और श्री ईश्वर सिंह ने भी Act-1989 को कड़ाई से लागू करवाने पर बल दिया तथा अत्याचार एवं भेद-भाव की स्थिति में अपनी शिकायत आयोग को भेजने की सलाह दी।

उपस्थित समूह को सीमापुरी विधायक श्री राजेन्द्र पाल गौतम, गोकुलपुरी के विधायक चौधरी फतेह सिंह, व पूर्व विधायक वीर सिंह धीगांन (सीमापुरी), मेयर श्रीमती मीनाक्षी, ने भी अपने स्तर से न्याय की लड़ाई में लोगों को साथ देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर गुरू तेग बहादुर अस्पताल के एम.एस. डॉ. बी. के. जैन और UCMS के प्राचार्य डॉ. ओ.पी. कालरा ने आये विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर सफदरजंग अस्पताल के एम.एस. डॉ. राजपाल जी ने भी बाबा साहेब के अनुयाइयों को एकजुट होकर संघर्ष करने की बात कही।

वक्ताओं में स्थानीय यूनियन के नेता श्री भारत भूषण, श्री मोहन सिंह गहलोत, और श्री एस.एन. स्वामी ने भी आयोजकों को कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिये बधाई दी और हर स्तर पर सहयोग की बात कही।

गुरू तेग बहादुर अस्पताल, दिल्ली में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती के शुभअवसर पर सांसद मा. डॉ. उदित राज जी सभा को सम्बोधित करते हुए।

श्री गुलाब रब्बानी (दिल्ली राज्य संविदा कर्मचारी संघ के महासचिव) ने लोगो को Atrocity Act-1989 व दोषियों को प्रावधान के अनुसार दिये जाने वाले दंडो के बारे में विस्तार पूर्वक बताया।

समारोह को इस वर्ष के आयोजक मंडल के चेयरमैन डॉ. भरत सागर व आयोजक मंडल के सदस्यों ने भी संबोधित किया।

आयोजन को सफल बनाने में स्थानीय समाज सेवी मास्टर बृजपाल, सुनील चौटाला, महेश गौतम, राजेन्द्र, जय प्रकाश उर्फ लाला, ओंकार सिंह, मदन प्रधान, महेश, अजय चौटाला, महेन्द्र सिंह, राम सिंह रंगीला, मास्टर वीर पाल कटारिया (राष्ट्रपति पदक से सम्मानित), देवेन्द्र कुमार, श्री मदन प्रधान, मुकेशजी, सूरज गौतम, अमृतलाल राठौर आदि ने बढ़-चढ़कर सहयोग किया।

सभागृह में परिसंघ के नेता ब्रम्ह प्रकाश, काली चरण नेताजी, नेतराम ठगेला, एन.डी. राम, रविन्द्र सिंह, सी.एल. मोर्या, सी.एल. मीना, डॉ. आर.सी मथुरीया, श्री दया राम, श्री धरासिंह, श्रीमती मंजू आदि नेता गन उपस्थित थे।

डॉ. धनंजय कुमार
(प्लास्टिक सर्जन)
अध्यक्षः एस.सी./एस.टी. डॉक्टर एण्ड इम्पलाईज एसोसिशन, युसीएमएस एण्ड जी.टी.बी. हॉस्पीटल, दिल्ली
मो.नं. 9868411139

+++

"Wonder if Modi govt's help will evere reach us"

Residents of a Dalit village say no to aid from govt

We have heard that the Modi Sarkar has helped our government. But we wonder would the help fiter down to this dalit basti of cobblers, says Nakul Roka, a resident of Sarki village atop hills under Bhaktpura. Though only one person died in this village due to the Saturday's earthquake, most stone and brick structures here have developed cracks beyond repairs.

Nuvan, who dropped out of school after Class V, says, he knowes Narendra Modi is the Prime Minister of India and that he has reached out to the Nepal govrenment. Other villages shared Nuvan's view as they remain sceptical of any help was coming from the government.

"People on the foothills are most benefited by any government compensation," says Hari Bahadur Roka, a cobbler. He complains that no government official has reached out to them with food and tents." They are busy saving people in towns. They have not ventured into the valley to take stock of actual damage, Roka says, pointing towards at lest 30 badly damaged houses atop hills. Ram Bahadur Roka, a cobbler who earns around Rs. 300 per day, says the villagers have no faith in politicians who offer them only "assurances". It is an irony that Ram is wearing a T-shirt printed "Happy Time" on it. The only assets left with the villagers are goats and poultry.

Stone stairs lead up to hilltop from where there are several villages having either collapsed structurs or houses beyond repairs. The Only source of water for these villages is a stream. Women here grow vagetables on slopes, but only for personal use. No one is sleeping inside the cracked homes as aftershocks have not stopped yet. Even in the villages on the foothills, the better-off farmers, who too have suffered heavy damages, are complaining about no help from the governmnet. Tilak Mahat's family is outliving in a tent. His wife Sapna said, "I need to rebuild my hosue that has cracks at four places. But no government offcial has reached us."

-The Indian Express

+++

14 जून को पाली (राजस्थान) में सदस्यता लक्ष्य आधारित सम्मेलन

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनो का अखिल भरतीय परिसंघ द्वारा 14 अप्रैल, 2015 को डॉ. अम्बेडकर जयंती के अवसर पर पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली से दस लाख लोगों की सदस्यता का अभियान का लक्ष्य का संकल्प किया गया। उसके पश्चात सभी प्रदेश व जिला कार्यकारिणियां इस लक्ष्य से आगे निकलने के लिए अपने-अपने यहां सदस्यता लक्ष्य आधारित जन सभाएं आयोजित करना शुरू कर दिया है। इसी कड़ी में राजस्थान प्रदेश की पाली जिला इकाई ने 14 जून, 2015 को प्रातः 10 बजे से एक जनसभा अयोजित करने जा रही है। इस जन सभा में मुख्य अतिथि परिसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, डॉ. उदित राज जी होगें और इसमें पाली के अलावा आस-पास के अन्य जिलों के परिसंघ के पदाधिकारियों को भी आमंत्रित किया जा रहा है।

सभा के आयोजन की जिम्मेदारी मोहन लाल रासु, गोवर्धन लाल सिंगारिया, जितेन्द्र कुमार राणा, नरसिंह राम मुच्छावत, राजेन्द्र घावरी, मदन तेजी, मांगेलाल चौहान, डॉ. पूनाराम आदि ने ली है।

अधिक जानकारी हेतु पाली के जिलाध्यक्ष श्री मोहन लाल रासु
फोन : 9413394594, 9530295202
से सम्पर्क किया जा सकता है।

124th Birth Anniversary of Baba Sahib Celebrated

All India Confederation of SC/ST/OBC Organizations, J&K commemorated 124th Birth Anniversary of Baba Sahib Bhim Rao Ambedkar on 19th April 2015. A large number of men, women and children of Nai Basti, Ambedkar Colony of Khanpur Nagrota, Jammu participated.

This colony consists of SC's, Gujjars, Watal and some Hindu & Muslim families who are financially very poor and associated with labour work and do not have a single govt employee member. Here it is worth while to mention that only two girls in whole of the colony are 8th passed and majority of children are in primary standard and on hearing from them who apprised that they have lot of financial problems even they are short of study material and have insufficient wear. In the whole colony mere 3-4 chairs were found for accommodating the guests. State President, Confederation, Sh R K Kalsotra attended the function along with Mustaq Badgami, Ashiq Ali Watal, State Vice Presidents and Ramesh Chander, I/C Nagrota. At the outset when it was enquired that who was Dr. Ambedkar, poor masses were not in a position to even recognise the photo of Ambedkar Sahib. While addressing the participants specially children on this occasion, R K Kalsotra stated that Baba Saheb Bhim Rao Ambedkar was born amongst us and was a highly intellectual and visionary who played a key role in framing Constitution of India in his capacity as Chairman of Drafting Committee of the Constituent Assembly and gave us the right to get education which is also the prime slogan of Baba Sahib to educate ourselves.

124th Birth Anniversary of Baba Saheb Bhim Rao Ambedkar Celebrated. State President Shri R K Kalsotra with participants

Kalsotra further said that every poor child must get education and this is his prime agenda and promised that he will travel from village to village and guide children along with their parents to stay aware and vigilant to watch and guide their children in order to give attention to their studies. He said Confederation will come forward and support poor children by providing them study material. Confederation distributed note books and pens on spot to 200 children and assured them to visit again frequently. Mothers of the children who were in the ceremony complained that they have no source of income in the area so how could they support their children in order to continue their studies for which Kalsotra assured them that he will visit the area in coming days again with Government team for the formation of Self Help Group so that the women make their own group and work to earn. Kalsotra got nostalgic and apprised the gathering that he could recall his childhood days and remembered when we had nothing but due to Constitution of Baba Sahib he got education and employment and has now attained a position to help the needy ones for which he had come here and he now can help my brethren & sisters and the same is the story of all the scheduled caste who are now in good position. He appealed devepment of undeveloped masses of the society & also arrange camps in uneducated areas and call us. Mustaq Badgami said he belongs to Gujjar community, our Baba Sahib Ambedkar enshrined various provision in the Constitution for upliftment and welfare of downtrodden and socially underprivileged sections of the society and for providing equality to all, we are all one & we should to support each other. Ashiq Watal appealed to the cadre to work for the development of underprivileged masses by helping & guiding them to adopt at least first mantra of Baba Sahib to get education as Kalsotra ji said. He apprised the children he is the son of a sweeper & I am the first from my community from Bhardarwah who is matriculate & still working as sweeper but I am trying hard & educating my community to Don't involve your children in this disrespect job. He is telling his community to take one time meal & rest invest on your children's education so that they become doctors, engineers, pilots & big officers. We have come here to educate you to follow the path shown by Dr B R Ambedkar to educate your children and leave all disrespectful work. On this occasion while paying tribute to Bharat Ratan Baba Sahib Dr B R Ambedkar Veteran leader of the colony Janab Hanief apprised the Confederation leaders about the colony constructed by a big company of Mumbai on the name of Baba Saheb Ambedkar & due to illiteracy we were not aware about the personality of Baba Saheb which Confederation has apprised us about Baba Saheb. He complained no leader ever visited this colony & moreover official from JDA off & on visit this colony to threaten us for vacating this colony. Sh Ramesh Chander advised all families to remain united and to fight for their rights and justice. He assured if we remain united, we will not only be able to save our rights, nobody will come to threaten us.

- Shri R K Kalsotra
State President J&K

+++

Reminiscing Reservation and Appropriating Dr. B.R. Ambedkar's Thoughts in Contemporary Global Order: Dr. Udit Raj

Silchar, 17th April, 2015: Racial discrimination and gender inequality is the chief issue in our society. This issue had been at first addressed by the social reformer and politician Dr. B.R. Ambedkar. He always dreamt of and desired discrimination-free society against backward classes and also believed that active participation of women play a major role in shaping the society and nation building as well. However Ambedkar's dream has not yet come true. India is still reeling with this rampant issue. And this issue cannot be eradicated by a leader or an intellectual. For this common people in the society have to take the initiative and bring a change which has been addressed by Dr. Udit Raj, National Chairman, Confederation of SC/ST Welfare Association, New Delhi and MP (Lok Sabha).

Assam University SC & ST Employees Welfare Association (AUSEWA) organised 124th birth anniversary memorial lecture of Dr B.R. Ambedkar in Bipin Chandra Pal Seminar Hall on 16th April, 2015. Dr. Udit Raj was present as the key speaker on the occasion. Dr. Raj mentioned in his eloquent speech that Dr. B.R. Ambedkar is God to dalits and backward classes. Backward classes got their recognition properly because of Ambedkar's comprehensive and deliberate revolution against such menace and now these segments of people are walking almost together with other social classes.

Dr. Udit Raj addressing Dr. B.R. Ambedkar's Birth Anniversary participants at Silchar, Assam

Udit Raj also added that without equal participation of women, a nation cannot grow as suggested by Ambedkar too. Unfortunately women are not much aware of Ambedkar's contribution towards women empowerment due to certain clichés. Dr. Raj raised several questions in aura and cited his personal life success due to reservation. Reservation doesn't mean to exclude a social group and put forth a backward class person, although it is to uplift a backward class to synchronise with other social classes.

Dr. Udit Raj in his lecture addressed to teaching and non-teaching staff present in the hall regarding their accomplishment in life. He said that it is not only they achieved this because of family support and love but each of them represents a specific caste/class. Henceforth everyone should take a step forward and participate.

Among the dignitaries and other key persons present on the occasion were Sri Girindra Mallick, MLA and Cooperative Minister of Assam, Ex-MP Sri Kabindra Purakayastha and some other local representatives along with Vice Chancellor and Registrar of the university.

Every speaker highlighted impeccable contribution of Dr. B.R. Ambedkar and also a decision was taken to erect a statue of Ambedkar in the university campus.

-Nirakar Mallick

+++

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 18 ● Issue 11 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 16 to 30 Apirl, 2015

LAND ACQUISITION BILL AND DALITS

Dr. Udit Raj

Agriculture which was considered to be one of the finest professions in the world has become the most unprofitable business. With the promulgation of Land Acquisition Bill it has become the subject-matter of public debate for its repeal. whose vote bank is in dismay, is trying to spread all types of rumours under the garb of this topic. Money is not going to solve the problem of the farmers. There are many other alternatives to solve this problem on which there is no hue and cry. When there were no genetically modified seeds, there were no suicides. Why there is increase in suicide cases with the increase in production? The cost of manure, seeds, water, diesel, pesticides, tractors and other agricultural implements also did not impact the situation as much as the changed circumstances. Industrialization and consumerism have increased the cost of other materials more than the cost of food items which did not leave the farmers unaffected.

Earlier when the cost on food items was the maximum then it had become a proverb that agriculture is the best option. Now the maximum spending is on cars, phones, ACs, journeys, education, housing, servants, clubs, hotels, etc. The cost on foodstuff has decreased even in villages while other needs have increased. Ever since the era of capitalism and industrialization has started, the cost of farm products has decreased. The cost of a pair of shoes or a piece of shirt in a Mall is more than the profit earned on the sale of farm products per acre. It is not difficult to assess the cost on the manufacture of a pair of shoes or a piece of shirt. Anything costing a few hundred of rupees is sold in thousands and in lakhs. A mobile cover costing Rs. 10 to 20 is sold between Rs. 1,500 and 2,000. Now there must be extra source of income to meet these demands. Costly products should be produced in the fields. More than 60% of our population depends on agriculture while it has only 13% contribution in our Gross Domestic Product (GDP). In developed countries like America only 2% of its population is engaged in agriculture. There is even lesser population engaged in agriculture in Japan and Korea as there is no land worth farming. Most of the land is rocky and mountainous. Japan has 12.54% of its land which is fertile while India has 51.63%. Likewise Korea has 18.59% and Bangladesh 56%. Bangladesh is almost like us. Wherever there is less agricultural land their economy is quite stronger than ours. Japan's GDP is 4 trillion dollars while India's 2 trillion dollars. India has manifold fertile land than Japan. Besides area, our human resources are also manifold. Even then they are more advanced than us. The main reason is that they are more dependent on industry, trade, market, import and export, etc. Slowly we will also have to do so.

Leadership of some people is shining in the name of industrial corridor. They are mongering that through this Bill the land of farmers will be grabbed while it has been clarified that only one kilometer of land around the corridor boundary will be acquired in which small and marginal farmers will establish their industries. Perhaps there will hardly be any better coordination between industries. If employment increases, farmers will also go in for jobs. If there is employment generation, fewer people will be left for agriculture. There will be alternate source of income. Then our capacity to bear with the damage to our crops will also increase. No situation will arise for suicides due to destruction of crops. Have the so-called well-wishers of farmers ever supported or done anything for industrialization?

Baba Saheb Dr. B.R. Ambedkar gave a clarion call to the Dalits to come to the cities. The logic behind this call was that there is lesser discrimination in cities and opportunities for education are better. He knew that there is least chance of development by sticking to the profession of agriculture. Dalit-Adivasis do get affected by the Land Acquisition Bill because their livelihood depends upon labour in the fields and farmhouses. Kisan leaders have also influenced them while their real solution lies in urbanization. Even the life of a Peon in a city is sometimes better than that of a Zamindar. He is not only able to give good education to his children but his food and clothing is also better. Crores of employment opportunities will be generated through this corridor, of which Dalit-Adivasis maximnum .

Out of the nine modifications made by the Government in the new Land Acquisition Bill, which one is harmful and what is the proof for that? Provision of industrial corridor will not only provide employment opportunities not only to the Dalits but to the whole country. The modifications made are – there will not be any acquisition of land in the name of social infrastructure, barren land will be acquired to the extent possible, employment will be given to a member of the family whose land is acquired, there will not be any acquisition of land for any private hospital or school, the farmer will not have to go out of his District to plead his case, there will be a separate Bank account for amount of compensation, land will be acquired only for Government institutes and corporations. There is also provision to deal with errant officials. Can anybody tell where any loss to the farmer is? Only some modifications have been made in the structure of 2013 'The Right to Fair Compensation & Transparency in Land Acquisition, Rehabilitation & Resettlement Bill'. History will do justice and those who are doing propaganda against the Bill will understand its spirit, sooner than better.

+++

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22**,** Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:
Five years : Rs. 600/-
One year : Rs. 150/-

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com Computer typesetting by C. L. Maurya